इतना तो करना स्वामी .....

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले ।
गोविंद नाम लेकर, तब प्राण तन से निकले ।।1।।
श्रीगंगाजी का तट हो, यमुना का बंशी वट हो ।
मेरा साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ।।2।।
श्री वृंदावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसी–दल हो ।
विष्णु–चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले ।।3।।
सन्मुख साँवरा खड़ा हो, मुरली का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ।।4।।
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ।।5।।
केसर–तिलक हो आला, मुख चन्द्र–सा उजाला ।
डालूँ गले में माला, जब प्राण तनसे निकले ।।6।।
कानों जड़ाऊँ बाली, लटकी लटें को काली ।
देखूँ छटा निराली, जब प्राण तन से निकले ।।7।।
पीताम्बरी कसी हो, होठों पै कुछ हँसी हो ।
छबि यह ही मन बसी हो, जब प्राण तन से निकले ।।8।।
मेरा प्राण निकले सुख से, तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊँ घोर दुःख से, जब प्राण तन से निकले ।।9।।
उस समय शीघ्र आना, नहीं श्याम! भूल जाना
मुरली की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले ।।10।।
यह नैक–सी अरज़ है मानो तो क्या हरज़ है
कुछ आपका फरज़ है, जब प्राण तन से निकले ।।11।।